मेरे अल्फ़ाज़

ग़ज़ल संग्रह

कृष्ण शरण पटेल 'कृष्णा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मेरे अल्फ़ाज़

ग़ज़ल संग्रह

कृष्णशरण पटेल 'कृष्णा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-057-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **कृष्णशरण पटेल 'कृष्णा'**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

MERE ALFAZ BY KRISHNASHARAN PATEL 'KRISHNA'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

जीवन अनेक रंगों से रंगा बेहतरीन पल है। माना कि कभी दुख आता है मगर सुख भी तो पीछे-पीछे चला ही आता है। अक्सर लोग जो जिंदगी में हासिल न हुआ उसकी ही दुहाई देते हैं मगर जो जिंदगी में हासिल हुआ है वो भी तो ख़ुदा का दिया हुआ अनमोल तोहफा है।

'मेरे अल्फाज' एक ख़ूबसूरत सफर है मेरी अभिव्यक्ति का। मैंने अब तक जिंदगी को जितने करीब से देखा है, महसूस किया है, उसके हर रंग को अपने विचारों के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है।

वैसे तो मैं कोई मँझा हुआ गजलकार नहीं हूँ मगर अपने अनुभव, अहसासों और भावों को अपनी कलम के माध्यम से कागज पर उकेरने की कोशिश मैंने किया है। मुझे नहीं मालूम कि 'मेरे अल्फाज' की ग़ज़लें आपको कितना पसंद आयेगी मगर मुझे इन गजलों को लिखकर बेहद सुकून मिला है।

'मेरे अल्फाज' रचते समय मैंने जिंदगी के हर अहसास को करीब से जिया है, महसूस किया है और उसके बाद एक किताब की शक्ल में आपके हाथ में है।

अब मैं आपका ज्यादा समय न लेते हुए गुजारिश करूँगा कि अगले पन्ने की ओर चलिए और एक नजर डालिए 'मेरे अल्फाज' पर। आशा है कि मेरी ये अनमोल कृति ग़ज़ल-संग्रह आपको जरूर पसंद आयेगी।

कृष्णशरण पटेल 'कृष्णा'

अनुक्रमणिका

1.	इच्छा-परी हो तुम...	7
2.	रूमाल केवल...	8
3.	मुकरना नहीं चाहिए...	9
4.	आ जाना...	10
5.	दिल बेकरार रहता है...	11
6.	जरा भी फुर्सत नहीं...	12
7.	सताना नहीं आता...	13
8.	कविता-सा पहला प्यार है...	14
9.	क़ायल हवा...	15
10.	इम्तिहान की तरह...	16
11.	जरा सम्हलना होगा...	17
12.	हाले-दिल सुनाऊँ मैं...	18
13.	अर्जेंट चाहिए...	19
14.	और क्या...	20
15.	गर्दिश में हैं सितारे...	21
16.	ख़्वाब में ठहरने वाले...	22
17.	कोई तोलता ही नहीं...	23
18.	अधिकार हो गया...	24
19.	इम्तिहान है बहुत...	25
20.	राज की बातें करो...	26
21.	इश्क़ बेपनाह कर लें...	27

22.	होता क्यों हैरान है...	**28**
23.	मुस्कुराना भी जरूरी है...	**29**
24.	कैसा पैमाना है...	**30**
25.	क़माल था, क्या था...	**31**
26.	कल की क्या ख़बर...	**32**

इच्छा-परी हो तुम..

हर रिश्ते के अहसास में उतरती गहरी हो तुम।
जिस गली में मिल जाता स्नेह, वहाँ ठहरी हो तुम।

क्या बचपना, क्या किशोरावस्था और क्या जवानी?
हर दौर में मुस्कान बाँटते हुए निखरी हो तुम।

कौन क्या चाहता है, जरा माँगकर तो देखे,
ख़्वाहिशों को पूरा कर दे, वो इच्छा-परी हो तुम।

तुम्हारा कहना, लिखना या फिर कुछ अलग सीखना,
ललक सहित ख़ूबसूरत अंदाज से भरी हो तुम।

अपनों को बहुत ही नाज है अपनी मिल्कियत पर,
उस घड़ी से, जिस घड़ी उनके जिगर उतरी हो तुम।

आज-सा बेहद खुशी का दिन, तुम्हारा हर दिन हो,
ख़ुशनसीब है ये पल भी जिसकी सहचरी हो तुम।

चिराग लेकर भी ढूँढ लो तो मिलना नामुमकिन,
कायनात से अलग 'कृष्णा' की राहबरी हो तुम।

रूमाल केवल...

संदेह कोई बस दे जाता है सवाल केवल।
अश्कों का दर्द बता जाता है रूमाल केवल।

मन का मैल सदियों का, इक पल में ही निकल गया,
गालों में प्यार से लगा गया जो गुलाल केवल।

दूसरे कैसे मेहनत किये, वो पूछता नहीं,
और बेवजह जलता रहता है कंगाल केवल।

सरकारी दफ्तरों में काम होना आसां कहाँ?
याद रह जाता है इस दौरां कदम-ताल केवल।

प्राईवेट सेक्टर में सभी काम अच्छे होंगे,
बस जेबों से ढीला करना जानो माल केवल।

गुनाहगार का चेहरा अब पीला पड़ गया है,
बच गया है इस तरफ अब जाँच-पड़ताल केवल।

अन्न को यूं ही फेंक देना क्या उचित है 'कृष्णा'?
खाने में निकल क्या गया छोटा-सा बाल केवल।

मुकरना नहीं चाहिए...

दिल तोड़के किसी का संवरना नहीं चाहिए।
जुबान देकर किसी को मुकरना नहीं चाहिए।

गम औ खुशी का आना-जाना तो लगा रहता,
बात-बात में हमेशा सुबकना नहीं चाहिए।

बारिश-तूफानों का इरादा जब ख़तरनाक है,
जानबूझकर भवन से निकलना नहीं चाहिए।

दूजों की चुगली करने में भला क्या रखा है?
आग लगा चुपचाप खिसकना नहीं चाहिए।

छवि बनाओ ऐसे कि लोग याद रखे ताउम्र,
किसी की आँख में शक़्ल खटकना नहीं चाहिए।

सफलता मिलेगी, चाहे कुछ भी काम तो करो,
बस आधे-अधूरे में बदलना नहीं चाहिए।

कितना गहरा है इश्क़ पहले जान लो 'कृष्णा',
हड़बड़ी कर मैदां में उतरना नहीं चाहिए।

आ जाना...

जेहन से अपनी यादों की परत जरा हटा जाना...!
हो अगर कोई कड़वी बात, आहिस्ता उसे भुला जाना...!

तेरी हाँ-ना में उलझकर अब सुलझ गया हूँ...
तुझे दिल में बसना हो तो समय निकाल आ जाना...!

तेरे ख़्यालों से निकलकर भला क्या लिखूँ...
कलम चलेगी जरूर, अपना अहसास जरा करा जाना...!

मिलना... बिछुड़ना... फिर मिलना बरसों बाद...
किस्मत परीक्षा लेती है, कोई मिले तो उसे बता जाना...!

खुश कैसे करते हैं किसी को, कोई तुमसे सीखे...
अबकी बार जब मिलो, मुझे भी ये कला सिखा जाना...!

बड़ा बेदर्द है ये जमाना, लोगों से सुना है ये बात...
कोई मुझे ढूँढने आये, अपनी आगोश में ले छुपा जाना...!

'कृष्णा' की एक छोटी-सी दुनिया, उसमें रहती तुम...
हाँ-ना से निकल तुम भी कभी अपनी दुनिया बसा जाना...!

दिल बेक़रार रहता है...

न जाने कौन-सी क़शिश है, जो ये दिल बेक़रार रहता है?
दूर होकर भी कोई हर पल जेहन में सवार रहता है।

इस जमाने में भरोसा न जाने कितनों ने हरदम तोड़ा,
मगर कोई तो है जिस पर पल-पल अब ऐतबार रहता है।

अब यह आलम है कि मेरी जिंदगी में रात और दिन मानो,
हर एहसास हर ख़्वाबों में बसने को तैयार रहता है।

इक तसल्ली से अब जीने की उम्र और बढ़ गयी है सच में,
गमों की परवाह नहीं, अब इस दर पे गम-गुसार* रहता है।

ख़फा होने का इक डर भी, हमेशा सताता रहता अब तो,
कुछ अनहोनी मत हो, साथ में ख़्वाहिश ख़ता-क़ार* रहता है ।

एक अतृप्त प्यास है, जो पूरी होने का नाम न ले रही,
पता है मिलन तो होगा नहीं, फिर भी इंतजार रहता है।

कैसे कहे ये 'कृष्णा' कि अब जिंदगी से और कुछ चाह नहीं?
ये क़मबख़्त दिल तो किसी के साथ का तलबगार* रहता है।

*गम-गुसार = शुभचिंतक
*ख़ता-क़ार = दोषी
*तलबगार = इच्छुक

जरा भी फुर्सत नहीं...

अजीब-सी है जिंदगी, कहीं कोई मुसर्रत* नहीं।
हरकत ऐसे कि आपस में जरा भी कुर्बत* नहीं।

कोई समझ ले जज्बात फिर क्या कहने,
नाराजगी के लिए फिर कोई शबे-फुर्कत* नहीं।

समझदार पी रहे हैं आजकल कड़वे घूँट,
इनके खाते में जहां से मिलने वाली शर्बत नहीं।

आईना बेचता था तो आता नहीं था कोई,
रखने लगा मुखौटे, तो जरा भी फुर्सत नहीं।

हाय! ये जमीं के दलालों के नापाक इरादे,
महफूज कब्रिस्तान का आज कोई तुर्बत' नहीं।

क्या रखा जिंदगी में, सब दो पल के मेहमान,
उदासी छोड़ो, मुस्कुरा लेने में कोई मुजर्रत* नहीं।

जो भी चाहते हो, बस ठान लो ऐ 'कृष्णा',
मजबूत इरादों से ऊँचा कोई भी पर्वत नहीं।

*मुसर्रत = आनंद / खुशी
*कुर्बत = नजदीकी / निकटता
*शबे-फुर्कत = विरह की रात
*तुर्बत = कब्र
*मुजर्रत = नुकसान / कष्ट

सताना नहीं आता...

मुझे किसी के दिल पे उतरकर वापस आना नहीं आता।
मुहब्बत पे यक़ीं है, मुझे किसी को सताना नहीं आता।

किसी की तक़लीफ देखकर बस बरबस आँख भर जाती है,
मेरे सजल-नयन को जरा भी अश्क़ छुपाना नहीं आता।

दूसरों का भी नाजुक दिल होता, ये बात मुझे पता है,
तभी दिल दुखाकर मुझे खरी-खोटी सुनाना नहीं आता।

कोई कर रहा है तरक्की तो ये बहुत ही अच्छी बात है,
दूजों के जैसे मुझे बेवजह जी जलाना नहीं आता।

पता नहीं जहां में लोग क्या सोचकर जुर्म कर जाते हैं?
कुछ गलत करके यहाँ मुझे कहीं भाग जाना नहीं आता।

काम कोई भी हो, इस जमाने में बिल्कुल तुच्छ नहीं है,
मेहनत का पुजारी हूँ मैं, मुझे शरमाना नहीं आता।

अगर ख़राब वक्त आया है तो निकल जायेगा भी जल्दी,
यूँ कहे तो हताशा का साथ मुझे निभाना नहीं आता।

ऊपर जाकर आखिर खुदा को मुँह दिखाना है, याद मुझे,
सो अपने क़रीबी को कुछ भी गलत सिखाना नहीं आता।

बड़ी मुश्किल से तो ये जिंदगी हासिल हुई है 'कृष्णा' को,
बिना कुछ अलग किये मुझे जिंदगी मिटाना नहीं आता।

कविता-सा पहला प्यार है...

किसी कवि की पहली सुंदर कविता सा पहला प्यार है,
मन से जुड़ते हैं हर शब्द.... नजरों से ही इजहार है।

कह सकते हैं बड़ा अजीब होता है चाहत का सफर,
एक ही शख़्स में.... सिमट जाता ये पूरा संसार है।

छोटी-सी जिंदगी में... सुनहरे ख़्वाब होते बड़े-बड़े,
एक अतृप्त प्यास का अब होता रहता विस्तार है।

जब तलक निगाहों के बाशिंदे का जरा दीदार न हो,
सच में कहाँ की कोई बहार और कहाँ का क़रार है?

हर पल खोया रहता है कोई.... यादों के भंवर में,
पर किसी की एक मुस्कान पे खुशियों की बौछार है।

इस क़शिश की घड़ी में... जुदाई कभी रास नहीं आती,
मिलन का आया जो मौसम, भूल गये फिर घर-द्वार है।

जीवन के सफर में... पहला प्यार कोई भूलता नहीं,
याद आता पहला प्यार 'कृष्णा' सच में बार-बार है।

क़ायल हवा...

किसी के आँख से चुरा लाई है काजल हवा।
क्या-क्या गुल खिलाने लगी है ये आजकल हवा।

जमीन में बन जाती है सरसराहट की वजह,
तो कभी-कभी तैरती है बनके बादल हवा।

किसी की मोहक खूशबू फिजा में बिखेर गई,
औ मस्ती में लहराई पाँव की पायल हवा।

दीवानों की बस्ती बिंदास आना-जाना है,
औ बिना हथियार के कर रही है घायल हवा।

इसका कोई सगा रिश्ता है नदी-सागर से,
इक मुलाक़ात में सुन लेती है कल-कल हवा।

एक उम्मीद के सहारे टिकी चिराग की लौ,
मगर आते ही इधर मचा जाती हलचल हवा।

हर वक़्त एक-सा नहीं होता, कुछ यूं बताती,
इधर से उधर बिंदास घूम रही हर पल हवा।

कुछ बिखरते अहसास को देख अफसोस करती,
वहीं चंद मजबूत रिश्तों की है क़ायल हवा।

पूरे जहान में हर ठिकाने पर जा चुकी है,
पर 'कृष्णा' के शहर अब लहराई आँचल हवा।

इम्तिहान की तरह...

अबकी बार न मिलना किसी अनजान की तरह।
रिश्ता अटूट है अजीज दिलो-जान की तरह।

मैं नहीं कहता कि दिल में रह जाओ हमेशा,
आ जाना जिंदगी में बस मेहमान की तरह।

लिखूँ अहसासे-जिंदगी तो सुनना हाले-दिल,
तुम हमेशा बने रहना हम-जबान* की तरह।

कोई जुनूं या खुद-अजीयती* बिल्कुल न रहे,
गुजर जाना इक बार किसी तूफान की तरह।

मैं नहीं पत्थर-दिल, बात जान लेना जरूर,
मुझे भी दुख होता गम में इंसान की तरह।

खुशी की तलाश में लग सकता है नया सफर,
मगर मिट जाना नहीं कभी अरमान की तरह।

गर शामिल हूँ जिंदगी में तो जुदा मत करना,
वरना ये जिंदगी होगी बियाबान की तरह।

रूह तन से निकले तो कोई गिला मत रहे,
सब याद रखें चाहत की दास्तान की तरह।

अब और क्या बतायें, आलमे-हवास* अपनी?
'कृष्णा' क्या लगता है इक इम्तिहान की तरह?

*हम-जबान = सहभाषी
*खुद-अजीयती = स्वयं को दुख देने की प्रवृत्ति
*आलमे-हवास = होश की दुनिया

जरा सम्हलना होगा...

हालात सुधारने से पहले ख़ुद को सुधरना होगा।
दुनिया बदलने से पहले ख़ुद को ही बदलना होगा।

जब तक ये जान है आजमाईश होती ही रहेंगी,
तैयार रहो, सभी साँचे में हमेशा ढलना होगा।

अंजाम भी अच्छा होगा, आगाज से मत घबराओ,
नाकामयाबी के डर से जरा पहले मुकरना होगा।

ऊँची उड़ान की तरफ देखना बहुत अच्छी बात है,
मगर याद रहे जमीन को छोड़कर ही उड़ना होगा।

अकेले चलोगे तो ज्यादा मजा ले नहीं पाओगे,
असली मजा के वास्ते सबको साथ ले चलना होगा।

यक़ीनन बेहद ही ख़ूबसूरत लगोगे सबके बीच,
दर्पण छोड़ सीरत में झाँककर बस संवरना होगा।

जिम्मेदारी के बोझ से अगर कमर झुके तो क्या गम?
मगर क़द बढ़ाने के लिये तो दिलों को पढ़ना होगा।

ये भी जलना भला कोई जलना है कि शोला न धुआँ?
अमर हो जाने के लिये आफताब-सा जलना होगा।

दिल का क्या है 'कृष्णा', वो सदा कुछ भी माँग लेता है,
हासिल करो कुछ, इससे पहले जरा सम्हलना होगा।

हाले-दिल सुनाऊँ मैं...

क्या करूँ, किस-किस बात को किसको बताऊँ मैं?
खुद को याद रखूँ या उसको भूल जाऊँ मैं?

अब तक इस दिल में नापजीराई* का डर था,
कुछ कहे यारा तो उसके क़रीब आऊँ मैं?

जो नजर उठे मेरी तरफ तो दिखे कुछ जरर*,
जरूरी नहीं, हरदम हाले-दिल सुनाऊँ मैं?

उसकी यादें लगे नसीमे-सहर* का झोंका,
अहसास की खूशबू मिले, गले लगाऊँ मैं।

यूं बिछड़ना भी उसे बहुत आसां लगा मगर,
मुड़कर फिर से देखे तो अपना बनाऊँ मैं।

कभी लगे बेवजह फरेबे-शौक़* को पाला,
मिले फरेबी, अपनी शौक़ से मिलवाऊँ मैं।

बातें दिल-फरेब तो अदायें थीं दिलरूबा,
वजए-मुहब्बत* का ख़्याल कैसे दबाऊँ मैं?

चाक़े-जिगर* को भी आज तलक सम्हाल रखा,
वो देखना चाहे तभी तो ये दिखाऊँ मैं।

एक शक़्ल है नगीने की तरह दिल में जड़ी,
बेहद मुश्किल 'कृष्णा', इसे कभी हटाऊँ मैं।

*नापजीराई = स्वीकार न होना
*जरर = क्षति
*नसीमे-सहर = सुबह की हवा
*फरेबे-शौक़ = अभिलाषाओं का धोखा
*वजए-मुहब्बत = प्रेम-संबंधों का रख-रखाव
*चाक़े-जिगर = छलनी हुआ दिल

अर्जेंट चाहिए...

चेहरे की भाव-भंगिमा को बदल दे, अभी वो पेंट चाहिए।
एक ही सब्जी पसंद नहीं, हर रोज सब्जी डिफरेंट चाहिए।

हाये इन हसीनाओं की फरमाईश से बचाये कोई तो,
इनके दिल में कुछ भी ख़्वाहिश क्या हुई, वो चीज अर्जेंट चाहिए।

बड़े अजीब हैं क्या बोलें, आजकल के ये कर्मों के सौदागर?
काम हमेशा करते नहीं औ इंकम तो परमानेंट चाहिए।

एक घर ऐसा भी, जहाँ सारे हैं शराब के दीवाने बॉस,
यहाँ बदबू दूर करने के लिए नहीं किसी को सेंट चाहिए।

आधी बन गयी है सड़क औ खुद रास्ता निहार रही है जरा,
कुछ नहीं, पूरी होने के लिए सरकार से पेमेंट चाहिए।

आजकल किसी का दिल तोड़ना भी इतना आसान नहीं साहब?
कठोर-दिल होने के लिए भी आजकल खूब टैलेंट चाहिए।

तेरे फेस बुकिया कुछ दोस्त भी बड़े गजब के हैं सुनो 'कृष्णा',
खुद लाईक-कमेंट करे न, औ उनको लाईक-कमेंट चाहिए।

और क्या...

जिंदगी का मतलब गिरना फिर सँभलना और क्या?
इस जहां के आग में पककर चमकना और क्या?

क्यों पैदा हुए यहाँ, ये भी जानना है जरूरी,
नसीब में लिखा परवाने का जलना और क्या?

अंधेरे के बाद तो उजाला आता ही है,
धीरज के साथ राह में डटे रहना और क्या?

नशे की लत यानी दो पग और मौत की ओर,
बेहद बुरा है तलब में यूँ भटकना और क्या?

वक्त रहते हर काम को अंजाम देना ठीक,
वर्ना पछताकर बाद में सुबकना और क्या?

बीच राह में रूके तो मंजिल नहीं मिलेगी,
धीरे ही सही मगर निरंतर चलना और क्या?

चारदीवारी में रह 'कृष्णा' क्या दिखाओगे?
कुछ बनना है तो घर से निकलना और क्या?

गर्दिश में हैं सितारे...

क्यों समझ नहीं पाता इंसान, आज कुदरत के इशारे?
और बेवजह फिरता रहता है हर दिशा हारे-हारे?

जो बोया है अब तक, वही तो कल काटने को मिलेगा,
चाहे आँधी हो तेज तूफान हो या फिर तेज धारे।

कंजूसी की भी कोई हद होती है इस जमाने में,
कैसे जी रहें हैं ये लोग यहाँ अपने जी को मारे?

इतना अधिक भी स्वार्थी होना भला कोई काम का है?
बद्तर हाल बाँटकर खुद ढूँढते ख़ूबसूरत नजारे।

अपनी हरक़तों से बदनाम होने का ख़ौफ नहीं आज,
निशाना लगा रहें हैं दूसरों के कंधों के सहारे।

अच्छा कर्म तो कर लो अभी, अच्छा फल जरूर मिलेगा,
अच्छी बात नहीं है लगाना, जिंदगी के ख़िलाफ नारे।

तूफान से दो-दो हाथ करने का नाम ही जिंदगी है,
ख़्वाब कैसे पूरा होगा, बैठे रहेंगे जो किनारे?

इंसान हो तो इंसानियत को भी दिखलाओ तो जरा,
अहसास लगता है दफन कर दिये, ये सारे के सारे?

सीख ले कोई इनसे, इल्जाम को भी लगाना 'कृष्णा',
करते कुछ भी नहीं और कहते हैं, गर्दिश में हैं सितारे।

ख़्वाब में ठहरने वाले...

देख तुम्हें अच्छा लगता, मेरे ख़्वाब में ठहरने वाले।
कुछ पछताते भी होंगे बहुत, अपने से मुकरने वाले।

हरदम यूँ उदास रहना भी बिल्कुल ठीक नहीं है यारों,
दिल पे खास जगह बना लेते हैं अक्सर सँवरने वाले।

दूसरों की खुशी में खुश रहो तो बने रहोगे इंसान,
इंसान कहाँ रहते, दूसरों की खुशी से जलने वाले?

बेवजह न जाने क्यों इल्जाम लगाते रहते ये नासमझ?
खुश रहते हरदम हर घड़ी परिस्थितियों में ढलने वाले।

एक जगह पे रूक जाओगे तो सफलता मिलेगी नहीं,
मंजिल पा ही लेते हैं जहां में निरंतर चलने वाले।

अपने अहं को हमेशा के लिए दफन करो तो ही अच्छा,
किस बात का गरूर करते, एक न एक दिन मरने वाले?

मरने का अफसोस कुछ खास लोगों का होता ऐ 'कृष्णा',
दिलों में जिंदा रहते हैं हमेशा, वतन पे मिटने वाले।

कोई तोलता ही नहीं...

कहीं जुबान ख़ामोश, कहीं दिल बोलता ही नहीं?
कोई क्या बोले, बात कोई तोलता ही नहीं?

तोल ले जो नीयत फिर रंज किसी बात का न हो,
गम के बहाने फिर वो बोतल खोलता ही नहीं?

खुली मय की बोतल तरह है ये ईमानदारी,
कोई छूता नहीं, तो कोई छोड़ता ही नहीं?

छोड़ें कैसे सारे ऐब को अपने शरीर से?
तलब रग में न मिले तो ख़ूं कुछ घोलता ही नहीं?

घोल क्या देते जज्बातों में, गलत ख़बर सुनकर,
जाने क्यूं नजरें सही ख़बर टटोलता ही नहीं?

टटोल लेना बहुत जरूरी है मन की थाह को,
चाह बेवजह किसी ओर रूख मोड़ता ही नहीं?

मुड़े कहीं उससे पहले 'कृष्णा' की बातें सुनो,
बाद में मत कहना, कोई तो रोकता ही नहीं?

अधिकार हो गया...

अपनी तरकश में जो तीर रखे हैं, वो बेकार हो गया।
क्योंकि कोई और किसी का संसार हो गया।

और ये भी सत्य है कि बड़ी दुविधा की घड़ी आन पड़ी,
एक नादां बिन पूछे ही इश्क़ का दावेदार हो गया।

पता है ये दौरे-तमन्ना तो कभी खत्म नहीं होगी,
जेहन में लगे मानो अनचाहा खरपतवार हो गया।

जरूरी नहीं कि कोई दिल के बदले दिल ही दे,
जाने क्यों गुजरते पलों पर ज्यादा ऐतबार हो गया।

बाहर से कुछ जख़्म दिखे तो जरा इलाज भी करवा लें,
क्या करें उसका जो कोई तीर जिगर के पार हो गया।

ये दिल भी कमबख्त बहुत शैतान हो चला है आजकल,
कहता, ख़बर पढ़ें कैसे पुराना जो अख़बार हो गया।

ये चाहत की ख़ुमारी है या इंतजार की इंतेहा?
उसे चाहने के बाद ही ख़ुद से बेहद प्यार हो गया।

इक हक़ मिले तो बेहतर, दुनिया से निकलने के पहले,
मगर सोचना मत, एहसासों का खरीददार हो गया।

कृष्णा तो 'कृष्णा' है, वो दायरे में बंधेगा कैसे?
उसे तो जिसने चाहा, उसका उस पर अधिकार हो गया।

इम्तिहान है बहुत...

जरा गौर करो हम पर कइयों के एहसान है बहुत।
एक अच्छी जिंदगी के लिये आगे इम्तिहान है बहुत।

खुले विचारों का होना अच्छी बात मगर याद रहे,
बच्चों को ज्यादा छूट दे पालक परेशान है बहुत।

हर बंदा अच्छा है, इसमें जरा शक़ की गुंजाइश है?
सदा गम वही देता जो होता मेहरबान है बहुत।

जरा देखकर खिला करो नाजुक रंग-बिरंगे फूलों,
मसलने वाले मिलेंगे क्योंकि इधर सुनसान है बहुत।

समय का परिवर्तन तय है, सब शख़्स क्यों भूल जाते हैं?
वृद्धाश्रम की गली दिखाने वाले शैतान है बहुत।

दो दिन की बेरूखी में भी जख़्म हरे हो जाते हैं,
देखकर चलना, यहाँ अलग किस्म के इंसान है बहुत।

सारे अहसास दरो-दीवार से निकलने लगे हैं कहीं,
खाली डिब्बा बन रह गया है ये जो मकान है बहुत।

हँसमुख शक़्ल को देखकर गलत फहमी में नहीं रहना,
उस शख़्स के दिल में देखना चोट का निशान है बहुत।

बार-बार भूलने की बीमारी भी जरा ठीक नहीं?
यदि साँस लेना कभी भूल गये तो नुकसान है बहुत।

चाह के दौड़ में वक्त यूं ही गुजार देता आदमी,
और जब मौत पास आये, हर शख़्स हैरान है बहुत।

गजलों का रूख अब दूसरी तरफ कर लेनी चाहिये,
सारे शहर में हमारी ऐ 'कृष्णा' पहचान है बहुत।

राज की बातें करो...

बेख़ुदी बढ़ती चली है, तुम राज की बातें करो।
कल में जीना मंजूर नहीं, आज की बातें करो।

अंतिम पड़ाव आये उससे पहले समझ लो बात,
दो पल के लिये प्यार के आगाज की बातें करो।

आओ खो जाएँ बचपन की तरह हसीं ख़्वाबों में,
क़रीब आ जरा हसरते-परवाज* की बातें करो।

वक्त हाथ से निकल न जाए कहीं वक्त से पहले,
जी भर जाए कुछ ऐसी अंदाज की बातें करो।

अच्छी नहीं होती है ये बेमतलब की चुप्पियाँ,
बेहतर होगा ये सकूते-नाज* की बातें करो।

अपनी मधुर बोल को न छुपाकर रखो जमाने से,
हक़ीक़त में उस मखमली आवाज की बातें करो।

कोई शिक़ायत न होगी दर्द बाँटने के दौरां,
हमदर्द-सा लगे जो उस अल्फाज की बातें करो।

कोई इल्जाम न लगा पाये ये दुनिया के लोग,
सुनो, कुछ इस तरह नशेबो-फराज* की बातें करो।

अगर जी भर गया हो मुहब्बत की बात कर 'कृष्णा',
तो अब कुछ ऊपर वाले सरताज की बातें करो।

*हसरते-परवाज = उड़ने की लालसा
*सकूते-नाज = नाज भरी ख़ामोशी
*नशेबो-फराज = ऊँच-नीच

इश्क़ बेपनाह कर लें...

चलो दोनों मिलकर जमाने में एक गुनाह कर लें।
साथ दो पल का ही सही, इश्क़ बेपनाह कर लें।

ख़ामोशी को तोड़कर अहसास को दे दें जुबान,
किनारे रख हर मजबूरियाँ वफा की राह कर लें।

दोस्ती का भी रंग है और दुश्मनी का भी रंग है,
जिसे करके पछताना न पड़े, उसकी चाह कर लें।

होगी नहीं अब जिंदगी में, न आँसू और न आहें,
तौबा करके लरजते आँसू के साथ दूर आह कर लें।

कितना खुबसूरत है आने वाला हर इक लम्हा,
अपने रंग में हर दिन, साल और हर माह कर लें।

कहते हैं लोग सच कि मोहब्बत हो गयी है तुमसे,
तुम्हें भी है क्या, आओ मिलकर सलाह कर लें।

दिल का क्या क़सूर है 'कृष्णा' को न बताओ मगर,
आओ कम से कम, एक-दूसरे की परवाह कर लें।

होता क्यों हैरान है...

आज मतलब-परस्त क्यों हो गया हर इंसान है?
अपनी क्षणिक खुशी के लिए व्यर्थ बहुत परेशान है।

सब भूल गये क्या, ये धरती है माता अपनी,
फिर बात-बात पे लेता क्यों हर कोई इम्तिहान है?

खाने को अन्न दिया और पीने को जल दिया,
और सबसे महत्वपूर्ण रहने को दिया स्थान है।

फिर धरती माँ के प्रति हर शख़्स कैसे लापरवाह?
हरकत हैवानों वाली करके बनता क्यों नादान है?

बेहिसाब कूड़ा-करकट से पटने लगा है पूरा थल,
तो कोई कसर न छोड़ा, जल में जहर घोला हैवान है।

काट-काटकर वृक्षों को क्या मिला, बताओ तो?
फिर साँसों में घुटन पाकर अब होता क्यों हैरान है?

अब तो तपती धरती भी बहुत सिसकने लगी है,
मगर आज इंसान इंसानियत से ही क्यों अंजान है?

आज हर किसी को होश में आकर कुछ सोचना होगा,
याद रहे, हर किसी को चुकाना बेहिसाब अहसान है।

धरती के पुत्रों, ध्यान से बात ये सुनो 'कृष्णा' से,
तप्त धरा पर पौधा लगाना ही सबसे बड़ा दान है।

मुस्कुराना भी जरूरी है...

हमेशा रोना नहीं, जिंदगी में मुस्कुराना भी जरूरी है।
मुस्कुराने के साथ-साथ जरा खिलखिलाना भी जरूरी है।

खिलखिला जो पायेंगे तो सुख भी आएगा बेहद नजदीक,
पर उससे पहले दुख के पल को आजमाना भी जरूरी है।

आजमा लिया गमों को तो तन्हाई भी दूर हो जायेगी,
जेहन में लगे शिक़न के सभी परत हटाना भी जरूरी है।

हट जायेंगे आहिस्ता-आहिस्ता अनचाहे ये सारे पल,
सकूं चाहिए तो नाउम्मीदों को भुलाना भी जरूरी है।

भूल जाओ जिंदगी में बीत चुके, मिले सभी कटु अनुभवों को,
मधुर-समृति हेतु ख़ामोशी से बाहर आना भी जरूरी है।

आ जाओ अपनों के क़रीब, दूर-दूर रहना कुछ ठीक नहीं?
अच्छी यादें क़रीब हो तो रिश्ता निभाना भी जरूरी है।

निभा लो अब इस जहां में, हर दिल से दिल का रिश्ता ऐ 'कृष्णा',
आखिर में दुनिया से एक न एक दिन जाना भी जरूरी है।

कैसा पैमाना है...

भले लोग कहें कैसी ये हरकत कैसा पैमाना है?
मगर निगाहे-यार कहती है, ये कोई अफसाना है।

अपना ही दिल मानो पराया हो गया है अभी सच में,
आख़िरकार ये किस तरह का दिल से दिल का लगाना है?

कोई सूरत नजरों में बार-बार आये तो क्या करें?
अब तो खत्म भी हो गया मिलने का सारा बहाना है।

प्यार से दो बोल निकाल दो ये फिजा में तो बात बने,
वरना सारा शहर यहाँ घूमकर देखो बुतख़ाना है।

व्यवहार में लचीलेपन की कारगर दवा तो मिला दो,
उम्र खत्म होने तक हर-इक रिश्ते को जो निभाना है।

कोई भी जिद सदा आपस में दूरियाँ बढ़ा ही देती,
सो समझकर एक-दूजे को गलतफहमियाँ मिटाना है।

अपने-आपको इतना बदल डालो सबके सामने कि,
याद करना नहीं पड़े कब, किधर, कैसे मुस्कुराना है?

जख़्मों को देकर पूछने लगते हैं, क्यों क्या हुआ भई?
और इस हरकत से कठघरे में अब सारा जमाना है।

रूप, धन-संपत्ति किसी का भी घमंड ठीक नहीं 'कृष्णा',
एक वक्त के बाद तो सबको मिट्टी में मिल जाना है।

क़माल था, क्या था...

प्यार था या उसका मिसाल था, क्या था?
सही जवाब था या सवाल था, क्या था?

मिलावट की कई किस्में बाजार में,
साफ-शुद्ध चाँवल या दाल था, क्या था?

जनता नेताओं के चंगुल में फँसी,
फरेबियों का ये सब चाल था, क्या था?

जमीन की कीमत आसमान छू रही,
निवेश न करने का मलाल था, क्या था?

उम्र का न देखा फासला जोड़ा इक,
हुस्न और इश्क़ का क़माल था, क्या था?

शहर्टकट ने पहुँचाया अब जेल में,
जिद था, बुराइयों का जाल था, क्या था?

परिवार में किसी के पास नहीं समय,
मोबाइल से अजीब हाल था, क्या था?

वक्त समेटा नहीं उम्र के हिसाब से,
गुजरा इक पल था या साल था, क्या था?

उस घड़ी क्यों न कुछ कहा 'कृष्णा' लब से?
तब शब्दों का रहा अकाल था, क्या था?

कल की क्या ख़बर...

जो आज है वही असल जिंदगी है, कल की क्या ख़बर...?
एक साँस में जिंदगी है तो दूसरी साँस में क़बर...!

मगर फिर भी छटपटाता रहता है आज इंसान...
हुई नहीं कुछ ख़्वाहिश, कहाँ कर पाता कोई सबर...?

अजीब तरीक़े पाल रखे, हाल-चाल पूछने के...
हाल पूछ अनजाने छोड़ जाते शब्दों का जहर...!

जान से जो मार डालते अब तो ही उचित होता...
सोचो, तिल-तिल मार के क्यूँ रिश्तों पे ढाते क़हर...?

कुछ अच्छा कर जाओ तो सिर सदा ऊँचा रहेगा...
वरना दुनिया के सामने झुक जायेगी ये नजर...!

सोच-समझकर चलना हो तो चले आओ इस ओर...
वरना इतना आसां नहीं है जिंदगी का ये सफर...?

अब तुम्हीं बतला दो अबकी बार जरा 'कृष्णा' को...
इन हालातों में अब कैसे हो पाये गुजर-बसर...?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - कृष्णशरण पटेल 'कृष्णा'

जन्म - ०६.०२.१९७१

पिता - स्व. आनंद राम पटेल

शिक्षा - एम.ए. (हिंदी साहित्य)

पता - जगदलपुर (छत्तीसगढ़)

संप्रति - व्यवसाय (नेटवर्क मार्केटिंग), स्वतंत्र लेखन

मोबाइल - ९८२६३३९९५६, ९४२५५९५७२४

मेल - krishnasharanpatel6271@gmail.com

प्रकाशित पुस्तकें - सभी साझा संकलन...

०१. काव्य अमृत (जे.एम.पब्लिकेशन, नई दिल्ली), ०२. कश्ती में चाँद (नॉलेज ग्रुप पब्लिकेशन, मेरठ), ०३. खनक आखर की (नॉलेज ग्रुप पब्लिकेशन, मेरठ), ०४. गुलनार (श्री सत्यम प्रकाशन, झुंझुनू, राज.), ०५. मृगनयना (श्री सत्यम प्रकाशन, झुंझुनू, राज.), ०६. बज़्म-ए-तरब (श्री सत्यम प्रकाशन, झुंझुनू, राज.),०७. नई उड़ान-नया आसमान (प्रजातंत्र का स्तम्भ प्रकाशन, राजगढ़, मध्य प्रदेश), ०८. शहीद, (रॉक पिजन पब्लिकेशन, छत्तीसगढ़), ०९. मया (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस ग्रुप, जांजगीर, छत्तीसगढ़), १०. माटी (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस ग्रुप, जांजगीर, छत्तीसगढ़), ११. लाडो, (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस ग्रुप, जांजगीर, छत्तीसगढ़), १२. कुरसी (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस ग्रुप, जांजगीर, छत्तीसगढ़),

सम्मान - ०१.अमृत सम्मान, ०२.काव्य गौरव सम्मान, ०३.काव्य सागर सम्मान, ०४.साहित्य सारथी सम्मान, ०५.प्रजातंत्र का स्तंभ गौरव सम्मान, ०६.कागज दिल साहित्य दीप सम्मान, ०७.साहित्य सम्राट सम्मान, ०८.साहित्य भूषण सम्मान, ०९.साहित्य साधक सम्मान, १०.छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस, साहित्य गौरव सम्मान

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-057-5
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध